जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

उदयपुर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 30 संख्याः 97 प्रभात उदयपुर, मंगलवार 7 फरवरी, 2023 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

पुरातत्ववेत्ताओं ने ऐसी प्राचीन ममीज़ की खोज की है जिनके साथ मृतक के आदमकद कलर पोर्ट्रेट भी दफनाए गए थे। ये ममीज़ मिस्र के प्राचीन शहर फिलडैल्फिया के एक मकबरे में मिली हैं। कायरो के दक्षिण पश्चिम में 75 मील दूर फिलडैल्फिया शहर की स्थापना टोलमी काल (304 ईसापूर्व से 30 ईसापूर्व) में की गई थी, तब मिस्र पर सिकंदर महान के एक विख्यात सेनापति के वशंज राज कर रहे थे। प्राचीन फिलडैल्फिया क्रबिस्तान के उत्खनन मिशन के डायरैक्टर बासेन गेहाद ने कहा, उत्खनन के दौरान पुरातत्वविदों को ममी के पूरे बने दो पोट्रेट और साथ ही कुछ आधे बने पोर्ट्रेट भी मिले। फिलडैल्फिया में दफनाए गए लोगों का सम्बंध अवश्य ही उच्च मध्यम वर्ग या अभिजात्य वर्ग से रहा होगा, इसलिए उनकी कब्रों में महंगे पोर्ट्रेट रखे गए थे। ये पोर्ट्रेट संभवतया भूमध्य सागर के तटवर्ती शहर एलैक्ज़ैण्ड्रिया के कलाकारों ने बनाए थे। इस नई खोज से पहले, 1880 के दशक में हुए उत्खनन में भी ममी पोर्ट्रेट मिले थे। लुटेरों ने उन्नीसवीं सदी में फिलडैल्फिया सहित कई प्राचीन कब्रों को पोर्ट्रेट के लिए लूटा था। इसलिए पुरातत्व विशेषज्ञों को ज्यादा पोर्ट्रेट तो नहीं मिले पर विश्लेषण के लिए फिलडैल्फिया की कब्रों से कुछ पोर्ट्रेट अवश्य मिल गए। युनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफर्ड के एश्मोलीन म्यूज़ियम की प्रमुख क्यूरेटर, सूजन वॉकर ने बताया कि, रोमन ममी पोर्ट्रेट के लिए 1880 के दशक में कब्रें लूटी गई थीं। इनमें से अधिकांश पोर्ट्रेट वियना के डीलर और संग्रहकर्ता थिओडोर ग्राफ को बेच दी गई थीं। उसने इनका कैटलॉग बनाया और विश्वभर में इनकी प्रदर्शनी लगाई। अब कुछ पोर्ट्रेट म्यूज़ियमों में हैं तो कुछ अमीरों के निजी संग्रह में। वॉकर, जो खनन में शामिल नहीं थीं, ने कहा कि, नई खोज से ईजिप्शियन ममी पोर्ट्रेट पर और रौशनी पड़ सकेगी। क्योंकि इनकी आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से जांच की गई है। ममी पोर्ट्रेट के अलावा पुराविदों को कब्रिस्तान से एक इमारत के अवशेष और ईजिप्शियन यूनानी देवी आइसिस- एफ्रोडाइटी की मूर्ती मिली है, जिसे प्रेम की देवी कहा जाता है। एक पपायरी (भोज पत्र) के अवशेष भी मिले हैं, जिस पर मिस्र की कर्सिव स्क्रिप्ट और यूनानी भाषा में कुछ लिखा है।

कांग्रेस के रायपुर अधिवेशन में सी.डब्ल्यु.सी. के चुनाव होंगे?

24 से 26 फरवरी को आयोजित इस अधिवेशन में राहुल गांधी व प्रियंका चुनाव कराने के पक्ष में हैं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 फरवरी। इस बात को लेकर अभी भी रहस्य बना हुआ है कि, 24 से 26 फरवरी रायपुर में होने वाले कांग्रेस पार्टी के महाधिवेशन के दौरान कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सी.डब्ल्यु.सी.) के चुनाव होंगे या नहीं। यह पूछे जाने पर ए.आई.सी.सी. के संगठन प्रभारी ने कहा कि, इस बारे में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे निर्णय लेंगे।

सूत्रों ने कहा, कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में इस बात पर भारी मतभेद हैं कि पार्टी की सर्वोच्च निर्णायक समिति के लिए चुनाव होने चाहिए या नहीं।

सूत्रों का कहना है कि राहुल गांधी चुनावों के पक्ष में हैं क्योंकि वे विविध प्रकार से पार्टी के अंदर चुनावों पर जोर देते रहे हैं। समझा जाता है कि अब प्रियंका गांधी भी चुनावों के पक्ष में हैं तो वे यह भी चाहेंगी कि वे सी.डब्ल्यु.सी. में मनोनीत होने के बजाय, स्वयं भी कार्य समिति में स्थान के लिये चुनाव लड़ें। लेकिन जिस तरीके से शशि थरूर ने कांग्रेस के अधिकृत उम्मीदवार मल्लिकार्जुन खड़गे को चुनौती दे दी थी तथा 1000 से ज्यादा वोट हासिल कर लिये थे क्योंकि उन्हें काफी युवा वोटरों का समर्थन मिल गया था, इस सब को देखते हुये, शीर्ष नेता चुनाव कराये जाने की स्थिति में, काफी चौकन्ने रहने के लिये बाध्य हो जायेंगे।

- **प्रियंका तो स्वयं चुनाव लड़कर सी.डब्ल्यु.सी. का सदस्य बनना चाहती हैं, केवल मनोनीत सदस्य नहीं रहना चाहतीं।**
- **जैसा कि विदित ही है, कांग्रेस अध्यक्ष आधे सदस्य मनोनीत करते हैं तथा आधे चुनकर आते हैं।**
- **राहुल गांधी स्वयं भी चुनाव लड़ना चाहते हैं, पर अधिक संभावना है कि, कांग्रेसाध्यक्ष खड़गे उन्हें सी.डब्ल्यु.सी. में मनोनीत करेंगे।**
- **हाई कमान के अन्य वरिष्ठ नेता, सी.डब्ल्यु.सी. के सदस्यों का चुनाव कराने के पक्ष में नहीं हैं। वे इस बात से आशंकित हैं कि, खड़गे के खिलाफ कांग्रेसाध्यक्ष के चुनाव में शशि थरूर 1000 वोट पा गये थे, अधिकतर युवा नेताओं का।**
- **ए.आई.सी.सी. के सदस्य सी.डब्ल्यु.सी. के सदस्यों को अपने मतों से चुनते हैं। पर अभी तक ए.आई.सी.सी. के सदस्यों की सूची जारी नहीं हुई है, हालांकि राज्यों ने अपनी सूचियाँ मुख्यालय भेज दी हैं।**

यहाँ यह याद दिलाना उल्लेखनीय होगा कि कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में सोनिया गांधी ने अपने समग्र कार्यकाल में एक बार भी सी.डब्ल्यु.सी. के चुनाव नहीं कराये तथा मनोनयन संस्कृति चलती रही तथा कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में, वे पूरी सी.डब्ल्यु.सी. को मनोनीत करती रहीं।

सी.डब्ल्यु.सी. के अंतिम चुनाव सीताराम केसरी की अध्यक्षता में कोलकाता अधिवेशन में हुये थे।

परम्परानुसार मल्लिकार्जुन खड़गे के पार्टी अध्यक्ष चुने जाने की पुष्टि के लिये ऐसा महाधिवेशन आयोजित किया जायेगा। कांग्रेस के संविधान में ऐसा प्रावधान है कि सी.डब्ल्यु.सी. के आधे सदस्य निर्वाचित तथा आधे सदस्य मनोनीत होने चाहिए।

अगर चुनाव होते हैं तो ऐसी संभावना नहीं है कि राहुल गांधी चुनाव लड़ेंगे। वे नये पार्टी अध्यक्ष द्वारा सी.डब्ल्यु.सी. के लिये मनोनीत कर दिये जायेंगे।

पार्टी सूत्रों का कहना है यह भी अटकलों का विषय है कि सोनिया गांधी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विपक्ष चाहता है, अडानी प्रकरण किसी भी तरह जीवित रहे

भाजपा की रणनीति है, मीडिया व सोशल मीडिया के जरिये, ''डैमेज कंट्रोल'' हो

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 फरवरी। मोदी सरकार पर दबाव बढ़ाने की कार्यवाही के अन्तर्गत, विपक्ष ने आज सरकार और अडानी ग्रुप के खिलाफ संसद के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। ज्ञातव्य है कि अडानी ग्रुप तब विपक्ष के निशाने पर आया, जब अमेरिका की एक फर्म ''हिन्डनबर्ग रिसर्च'' ने अडानी ग्रुप पर स्टॉक में चालबाजी एवं फ्रॉड का आरोप लगाया था। तभी से विपक्ष यह माँग करता आ रहा है कि इस मुद्दे की जाँच या तो किसी संयुक्त संसदीय समिति से कराई जाये या फिर सर्वोच्च न्यायालय की निगरानी में इसकी जाँच-पड़ताल हो।

संसद भवन परिसर में लगी गांधी जी की मूर्ति पर किये गये विरोध प्रदर्शन के दौरान सांसद अपने हाथों तख्तियाँ लिये हुये थे, उन पर लिखे नारों में ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार और अरबपति (अडानी) के बीच ''यारी'' के आरोप दिखाई दे रहे थे। उन्होंने ''एल.आई.सी.'' और ''एस.बी.आई.'' बचाओ के नारे भी लगाये। सांसदों ने गत सप्ताह स्थगन नोटिस पेश कर दिये थे तथा कहा था कि ''जनता का पैसा बहुत बड़ी मात्रा में एस.बी.आई. तथा एल.आई.सी. के रास्ते अडानी ग्रुप की कैद में है।'' किन्तु सरकार ने शुक्रवार को एक बयान में कहा था कि बैंकों तथा बीमा कंपनियों की अरक्षितता (एक्सपोज़र) अनुमत (परमिटेड) के अंदर ही है।

कांग्रेस, द्रमुक, एन.सी.पी., बी.आर.एस., जद (यू), सपा, माकपा, भाकपा, झारखंड मुक्ति मोर्चा, राष्ट्रीय लोक दल, आर.एस.पी., ए.ए.पी., आई.यू.एम.एल., राजद तथा शिवसेना (यू.बी.टी.) के सांसदों के हाथों में लगी तख्तियों पर ''अडानी-मोदी में यारी है, पैसे की लूट जारी है', ''एल.आई.सी.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **दबाव बनाने के लिये विपक्ष की 16 पार्टियों ने संसद के बाहर गांधी जी की प्रतिमा के सामने नारे बाजी व प्रदर्शन किया।**
- **विपक्ष के नारे थे, ''मोदी -अडानी की पारी है, पैसे की लूट जारी है, ''नहीं चलेगी और बेईमानी, बस करो मोदी-अडानी'', ''एल.आई.सी. व एस.बी.आई. को बचाओ''।**
- **तृणमूल कांग्रेस ने, खड़गे के कक्ष में आयोजित विपक्ष के नेताओं की बैठक में भाग नहीं लिया। डैरेक ओ' ब्रायन ने बाद में तर्क दिया कि, अब संसद की कार्यवाही में व्यवधान नहीं डालना चाहिये, क्योंकि, अब धन्यवाद प्रस्ताव पर बहस में सदस्यों को मौका मिलेगा, मोदी सरकार को ''भेदने'' का।**
- **पर बाद में तृणमूल कांग्रेस ने गांधी जी की प्रतिमा के सामने विपक्ष द्वारा दिये गये धरने में भाग लिया।**

'शिवाजी ने लिखी थी औरंगज़ेब को चिट्ठी'

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 फरवरी। आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवात ने हिन्दू-मुस्लिम बहस शुरू करने के लिये एक बार फिर एक ऐतिहासिक प्रश्न उठाया है। उन्होंने एक पत्र का हवाला दिया है, जो काशी में एक मंदिर को ध्वस्त कर दिये जाने के बाद कथित रूप से शिवाजी महाराज ने बादशाह औरंगज़ेब को लिखा था।

भागवत ने रविवार को एक समारोह में कहा, ''एक मंदिर को ध्वस्त कर दिये जाने के बाद, छत्रपति शिवाजी महाराज ने औरंगज़ेब को एक पत्र लिखा था,

- **आर.एस.एस. प्रमुख ने कहा कि, काशी का मंदिर तोड़ने पर छत्रपति शिवाजी महाराजा ने औरंगज़ेब को पत्र लिखकर कहा था कि, अगर यह सब बंद नहीं किया तो, वे अपनी तलवार उठाएंगे।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हाई कोर्ट ने राज्य सरकार को कॉन्स्टेबल से हैडकॉन्स्टेबल पदोन्नति में विलम्ब का दोषी माना

हाई कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि, राज्य सरकार ने गलत तथ्य पेश कर कई कॉन्स्टेबलों की पदोन्नति रोकी

जयपुर, 6 फरवरी (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट में नागौर जिले में 2012-13 में कॉंस्टेबल से हैड कॉंस्टेबल की पदोन्नति से जुड़े विवाद पर अदालत ने आदेश दिये हैं कि राज्य सरकार ने पदोन्नति के लिये रिक्त पदों की गणना गलत तरह से की है। अदालत ने अपने आदेश में आगे भी यह भी कहा कि कई कॉंस्टेबल, जिन्हें वर्ष 2012-13 में ही हैड कॉंस्टेबल के पद पर पदोन्नत कर देना चाहिये था, उन्हें सरकार ने गलत तथ्य देकर पदोन्नत नहीं होने दिया।

अदालत के इस फैसले से नागौर जिले में 28 और कॉंस्टेबल्स की पदोन्नति का वर्ष 2013 माना जायेगा जबकि राज्य सरकार ने इन्हें 2014 या उसके बाद पदोन्नत किया था। इस मामले में याचिकाकर्ता महावीर सिंह और अन्य की ओर से अधिवक्ता तनवीर अहमद और एम.एम. महर्षि पैरवी के लिये पेश हुए। जैसा कि विदित है कि जयपुर जिले में भी कॉंस्टेबल से हैड कॉंस्टेबल और हैड कॉंस्टेबल से ए.एस.आई. के पदों पर पदोन्नति देने के मामले में राज्य सरकार ने गलती की थी, जिसे सरकार ने अदालत के समक्ष भी माना था। इस मामले में न्यायाधीश इन्द्रजीत सिंह ने राज्य सरकार को आदेश दिये थे कि वह 377 'शैडो पोस्ट' का गठन करें ताकि नियमानुसार योग्य व्यक्तियों को पदोन्नति दी जा सके।

वर्तमान मामले में अधिवक्ता तनवीर अहमद ने बताया कि उनके मुवक्किलों को 2014 या उसके बाद पदोन्नति तो दे दी गई थी परंतु उन्होंने प्रमोशन कैडर कोर्स (पी.सी.सी.) 2013 में ही पास कर लिया था, जिसके बाद वे पदोन्नति के योग्य हो गये थे।

इस मामले में याचिकाकर्ताओं का कहना है कि राज्य सरकार ने उन्हें पदोन्नति से नियम विरुद्ध रोक रखा था। उनसे कनिष्ठ कर्मियों को पदोन्नति दी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **इस फैसले के अनुसार पदोन्नति का वर्ष अब 2013 माना जाएगा।**
- **वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों का कहना है कि, इन गड़बड़ियों का असर प्रदेश में एस.आई. के दो से ढाई हजार पदों को भरने या उन पर पदोन्नति देने पर पड़ेगा।**

प्रणीत कौर ने ''शो कॉज'' नोटिस की खिल्ली उड़ाई

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 फरवरी। पार्टी के ''शो कॉज'' नोटिस के प्रति पूर्ण असम्मान दर्शाते हुए पटियाला की लोकसभा सांसद और पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **पंजाब की कांग्रेसी सांसद प्रणीत कौर ने अनुशासनात्मक कार्यवाही समिति के प्रमुख तारिक अनवर पर निशाना साधा और कहा, ''जिसने सोनिया के विदेशी मूल का मुद्दा उठाया था और 20 साल से पार्टी से बाहर रहा और जो खुद अनुशासनात्मक कार्यवाही का सामना कर चुका है, वह मुझसे सवाल पूछ रहा है।''**

'संविदा पर लगे कर्मचारी को हटाकर दूसरा संविदाकर्मी नहीं लगा सकते'

जयपुर, 6 फरवरी (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा है कि संविदा पर लगे कर्मचारी को हटाकर उसके साथ पर दूसरे संविदाकर्मी को नियुक्त नहीं किया जा सकता। इसके साथ ही अदालत ने मामले में प्रदूषण नियंत्रण मंडल के चेयरमैन व सचिव से जवाब मांगा है। अदालत ने मंडल में संविदा पर लगे आईटी ऑफिसर को पद से हटाने पर भी रोक लगा दी तथा उसे मौजूदा पद पर काम करते रहने को कहा है। जस्टिस

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **राजस्थान हाई कोर्ट ने यह कहते हुये प्रदूषण नियंत्रण मंडल के चेयरमैन व सचिव को नोटिस दिया तथा संविदा पर लगे आई.टी. अफसर को हटाने पर रोक लगा दी।**

अडानी प्रकरण में कांग्रेस ने केन्द्र सरकार पर अपने उद्योगपति मित्रों को बचाने के आरोप लगाए

शहर और देहात जिला कांग्रेस कमेटी, दोनों नगर निगमों और 19 विधानसभा क्षेत्रों के लोगों को जयपुर में विरोध प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया, लेकिन इसमें गिनती के लोग ही पहुँचे

जयपुर, 6 फरवरी (का.प्र.)। ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी (ए.आई.सी.सी.) के आव्हान पर अडानी प्रकरण को लेकर कांग्रेस की ओर से पूरे देश में एलआईसी तथा एसबीआई बैंकों के बाहर धरने-प्रदर्शनों किए गए। इसी कड़ी में राजस्थान के भी सभी शहरों में धरने प्रदर्शन कर विरोध प्रकट किया गया, जिसमें जयपुर में एलआईसी भवन के सामने विरोध प्रदर्शन करने के लिए जयपुर शहर और देहात कांग्रेस कमेटी, दोनों नगर निगम तथा 19 विधानसभा क्षेत्रों के लोगों और सरकार में राजनीतिक नियुक्तियां पा चुके नेताओं को भी आमंत्रित किया गया था।

ऐसे में उम्मीद की जा रही थी कि कार्यक्रम में कम से कम हजार, पंद्रह सौ लोग तो मौजूद रहेंगे, लेकिन स्थितियां यह थी, कि जितनी कुर्सियां मंगाई गई थी, उनमें से आधी तो समेटकर पीछे रख दी गई और बाकी बची उनमें से भी बहुत सी खाली नजर आ रही थी। ये स्थितियां तब हैं जब राजस्थान में कांग्रेस का ''हाथ से हाथ जोड़ो'' कार्यक्रम चल रहा है। वही यह चुनावी वर्ष है, जिसमें कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत 156 सीटें लाने की बात कर रहे हैं, लेकिन सोमवार को हुए विरोध-प्रदर्शन से आम कांग्रेसजनों की दूरी बता रही है कि शायद वे अपने नेताओं से निराश हो चुके हैं, इसलिए पार्टी के प्रोग्रामों से भी दूरी बना चुके हैं।

अडानी समूह में एलआईसी के निवेश के विरोध में सोमवार को प्रदेश भर में कांग्रेस ने विरोध प्रदर्शन किया। राजधानी जयपुर में एलआईसी कार्यालय के बाहर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मोदी सरकार के खिलाफ हल्ला बोला। राजधानी में अंबेडकर सर्किल स्थित एलआईसी मुख्यालय के सामने कांग्रेस ने धरना दिया। धरने में कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, महेश जोशी, विधायक रफीक खान, गंगादेवी, अमीन कागजी, महापौर मुनेश गुर्जर सहित समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष अर्चना शर्मा सहित प्रदेश कांग्रेस के कई पदाधिकारी और विधानसभा चुनाव हार चुके उम्मीदवार मौजूद रहे, लेकिन चुनिंदा कांग्रेसजनों के अलावा वे लोग ही मौजूद थे, जिन्हें बसों से भरकर लाया गया था। इसके बावजूद भीड़ उंगलियों पर गिनने लायक थी।

इस मौके पर खाचरियावास ने कहा कि सब कुछ शीशे की तरह साफ हो गया है। मोदी-अडानी का गठजोड़ सबके सामने है। उन्होंने आरोप लगाया कि एलआईसी और एसबीआई ने अपने करोड़ों निवेशक धारकों की गाढ़ी कमाई का पैसा जोखिम लेकर अडानी समूह में निवेश किया। निवेश के दौरान सारे नियम कायदे ताक में रखे गए थे। खाचरियावास ने कहा कि षड्यंत्र इतना गहरा था कि किसी को खबर नहीं हुई, लेकिन एक विदेशी कंपनी ने भ्रष्टाचार का खुलासा किया। अब इस मामले में केंद्र सरकार अडानी समूह पर कार्रवाई करने की बजाय उन्हें बचाने का प्रयास

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **मंच पर दो कैबिनेट मंत्री, तीन विधायक एक महापौर सहित अन्य नेता मौजूद थे, लेकिन सामने भीड़ नहीं थी।**
- **यह स्थिति तब है जब राजस्थान में कांग्रेस का ''हाथ से हाथ जोड़ो'' कार्यक्रम चल रहा है और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इसी वर्ष में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के लिए 156 सीटें लाने की बात कर रहे हैं।**
- **कांग्रेसजनों की दूरी बता रही है कि, वे शायद अपने ही नेताओं से निराश हो चुके हैं।**